3

बुराई में अच्छाई

(शिक्षाप्रद कहानी)

प्रतिध्वनि

"एक सकारात्मक सोच से आप अदृश्य को देख सकते हैं और असंभव को पा सकते हैं।"

गर्मियों के दिनों में एक शिष्य अपने गुरु से सप्ताह भर की छुट्टी लेकर अपने गाँव जा रहा था। तब गाँव पैदल ही जाना पड़ता था। जाते समय रास्ते में उसे एक कुआँ दिखाई दिया।

शिष्य प्यासा था, इसलिए उसने कुएँ से पानी निकाला और अपना गला तर किया। शिष्य को अद्‌भुत तृप्ति मिली, क्योंकि कुएँ का जल बेहद मीठा और ठंडा था।

शिष्य ने सोचा–क्यों न यहाँ का जल गुरु जी के लिए भी ले चलूँ। उसने अपनी मशक भरी और वापस आश्रम की ओर चल पड़ा। वह आश्रम पहुँचा और गुरु जी को सारी बात बताई।

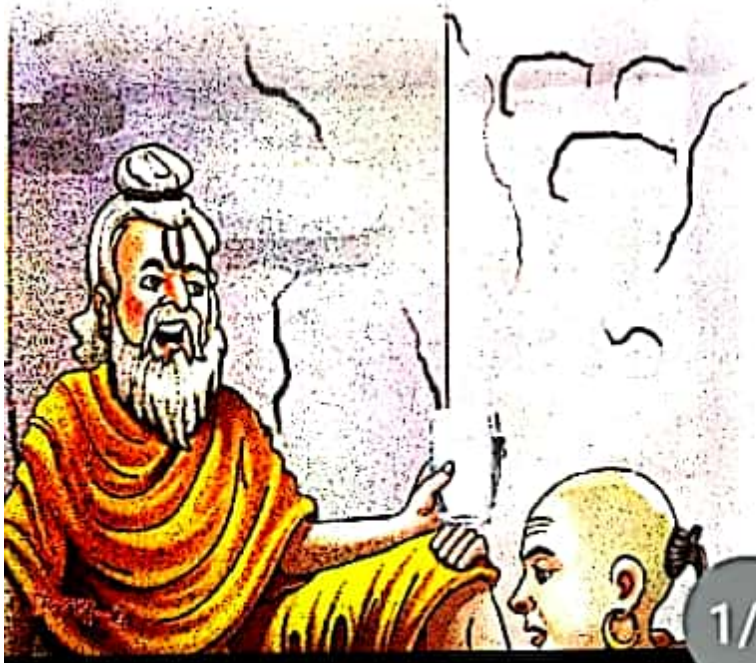

गुरु जी ने शिष्य से मशक लेकर जल पिया और संतुष्टि महसूस की। उन्होंने शिष्य से कहा–वाकई जल तो गंगाजल के समान है। शिष्य को खुशी हुई। गुरु जी से इस तरह की प्रशंसा सुनकर, शिष्य आज्ञ लेकर अपने गाँव चला गया।

1/2

Scanned with CamScanner

कुछ देर में आश्रम में रहने वाला एक दूसरा शिष्य गुरु जी के पास पहुँचा और उसने वह जल पीने की इच्छा जताई। गुरु जी ने मशक शिष्य को दी। शिष्य ने जैसे ही मुँह में उसने पानी बाहर कुल्ला कर दिया।

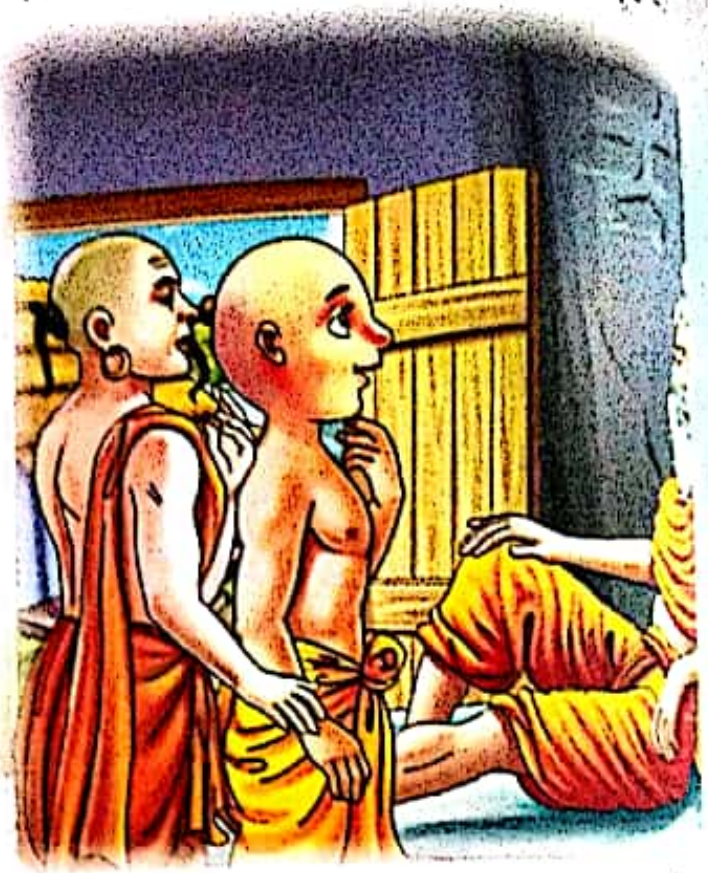

शिष्य बोला, "गुरु जी इस पानी में तो कड़वापन है और न ही यह शीतल है। आपने व्यर्थ ही उस शिष्य की इतनी प्रशंसा की।"

गुरु जी बोले, "बेटा, मिठास और शीतलता इस जल में नहीं है तो क्या हुआ। इसे लाने वाले के मन में तो है। जब उस शिष्य ने जल पिया होगा तो उसके मन में मेरे लिए प्रेम उमड़ा। यही बात महत्वपूर्ण है। मुझे भी इस मशक का जल तुम्हारी तरह अच्छा नहीं लगा। पर मैं यह कहकर उसका मन दुखी करना नहीं चाहता था। हो सकता है जब यह मशक में भरा गया, तब वह शीतल हो और मशक के साफ न होने पर यहाँ तक आते-आते यह जल वैसा नहीं रहा, पर इससे लाने वाले के मन का प्रेम तो कम नहीं होता है ना।"

जीवन मूल्य : दूसरों के मन को दुखी करने वाली बातों को टाला जा सकता है और हर बुराई में अच्छाई खोजी जा सकती है।

शब्दार्थ

तर	- गीला	शिष्य	- चेला, शागिर्द
तृप्ति	- संतोष	अद्‌भुत	- आश्चर्यचकित करने वाला
मशक	- पानी भरने का एक थैला	शीतल	- ठंडा
महत्वपूर्ण	- बेहद जरूरी	प्रशंसा	- बड़ाई या तारीफ

Scanned with CamScanner

Class 2 पाठ 3 बुराई में अच्छाई

प्रश्न - निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

क- शिष्य वापस आश्रम की ओर क्यों चल पड़ा ?
उत्तर- शिष्य कुए का मीठा और ठंडा जल गुरुजी को पिलाने के लिए वापस आश्रम की ओर चल पड़ा ।

ख- मशक से जल पीकर गुरु जी ने शिष्य से क्या कहा ?
उत्तर- मशक से जल पीकर गुरुजी ने शिष्य से कहा कि जल तो वास्तव में गंगाजल के समान है ।

ग- इस कहानी से हमें क्या शिक्षा मिलती है?
उत्तर - इस कहानी से हमें यह शिक्षा मिलती है कि दूसरे के मन को दुखी करने वाली बातों को नहीं कहना चाहिए तथा हर बुराई में अच्छाई खोजी जा सकती है ।

नोट - कृपया शब्द -अर्थ एवं प्रश्नोत्तर कॉपी में लिखें ।

Scanned with CamScanner

रिक्त स्थानों को सही शब्द से भरें–

(क) गर्मियों के दिनों में शिष्य अपने ·····गाँव····· जा रहा था।

(ख) शिष्य को कुएँ के जल से ·····तृप्ति····· मिली।

(ग) गुरु जी को जल ···गंगाजल··· के समान लगा।

(घ) मिठास और शीतलता इस जल में नहीं है तो क्या हुआ, इसे लाने वाले के ···मन··· में तो है।

Scanned with CamScanner

सही उत्तर पर (✓) का निशान लगाइए– (Multiple Choice Questions (MCQs)

(क) शिष्य कब छुट्टियों में वापस घर जा रहा था?

(i) सर्दियों में ○ (ii) बारिश में ○ (iii) ग्रीष्म में ✓

(ख) शिष्य ने सोचा कि क्यों न यह जल मैं ..... के लिए ले चलूँ।

(i) मित्रों ○ (ii) परिवार ○ (iii) गुरु जी ✓

ग) दूसरों के मन को दुखी करने वाली बातों को

(i) बोल देना चाहिए ○ (ii) नहीं बोलना चाहिए ✓

Scanned with CamScanner